International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 02-01-2019; Accepted: 05-02-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 2; March 2019; Page No. 01-05

लम्बी कहानी तीसरी कसम में प्रयुक्त शिल्प विधान

दिगंत बोरा
शोधार्थी, हिंदी विभाग, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, इटानगर, अरुणाचल प्रदेश, भारत।

सारांश
शिल्प अंग्रेजी के 'technique' का हिंदी रूपांतर है। 'Craft', 'structure' और 'form' ये तीनों अंग्रेजी में 'technique' का ही पर्याय है। फॉर्म का शाब्दिक अर्थ है को अभिव्यकृत करते है। जिसके द्वारा कथाकार अपनी कथा रूप। शिल्प का संबंध का रचना पद्धति से है। लेखक अपने कथा को अभिव्यक्त करने के लिए जिस पद्धतियों का प्रयोग करते है उसे ही शिल्प कहा जाता है। फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने अपनी कहानी 'तीसरी कसम' कथा की अभिव्यक्ति के लिए विविध उपायों को प्रयोग किया है जैसे- सांकेतिकता, प्रतीकात्मकता, बिम्ब विधान, काव्यात्मक भाषा, चित्रात्मक भाषा, बोलचाल की भाषा, लोकोक्ति, लोकगीतों, लोकगाथाओं, मिथकों, मुहावरा आदि। कथा कहने की विविध शैलियों में वर्णनात्मक शैली, पूर्वदिप्ती शैली, संवदात्मक शैली आदि का प्रयोग की हैं। पात्रों की रूप रचना के प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों शैली का सुंदर प्रयोग किया है। विविध भाषाओं के शब्द प्रयोग से रेणु ने अपनी कहानी को एक नूतन रूप प्रदान की है। रेणु जी ने भाव, विचार तथा चरित्र के अनुकूल भाषा का नूतन प्रयोग किया है। उन्होंने तत्सम, तद्भव, देशज, आगत आदि शब्दों का सार्थक प्रयोग किया है। इस तरह रेणु ने अपनी कहानी 'तीसरी कसम' में शिल्प के विविध रूपों का सुंदर प्रयोग किया हैं।

मूल शब्द : शिल्प, चरित्र, कथा, रूप, शैली, पद्धति, कहानी, शब्द, पात्र, भाषा, चित्रात्मक, काव्यात्मक, मिथक, लोकगाथा, लोकगीत, विधि, वातावरण, परंपरा, प्रतीकात्मकता, सांकेतिकता, युग्म, धन्यात्मक, लोकोक्ति, शीर्षक, संवाद आदि।

प्रस्तावना

कथाओं में घटना होती है जो पात्र के साथ घटित होते है। परंतु जब ये घटनाएँ घटती है तब उसका संबंध किसी देश काल या वातावरण से होती है। इसलिए कथा में यह भी वांछनीय होते है। हर कथाकार की घटनाओं को प्रस्तुत करने की अपनी शैली होती है, जिस कारण वह दूसरे कथाकार के कहानी से अलग होती है। कथा साहित्य के सभी तत्व के साथ कथाकार जो ताल-मेल बैठाते है, उसे ही कथाकार की रचना विधि तथा कहानी की शिल्प विधि कहा जाता है।

शिल्प अंग्रेजी के 'technique' का हिंदी रूपांतर है। 'Craft', 'structure' और 'form' ये तीनों अंग्रेजी में 'technique' का ही पर्याय है। फॉर्म का शाब्दिक अर्थ है रूप। शिल्प का संबंध का रचना पद्धति से है। जिसके द्वारा कथाकार अपनी कथा को अभिव्यक्त करते है। रचनाकार की अनुभूति गतिशील है, इसी कारण साहित्य का शिल्प या रचना पद्धति भी परंपरा प्राप्त कला सिद्धांत नहीं है, वह भी परिवर्तित होते रहते है। साहित्य सृजन कुछ रूढ़िया अवश्य रहती है, परंतु वह साहित्य सृजन में बाधा नहीं बन सकती। लेखक की लेखन परंपरा से नई परंपरा निर्मित होती है।

टेक्नीक शब्द का परिभाषा अंग्रेजी शब्दकोश में दिया गया है कि- "कलात्मक कार्यवाही की वह रीति जो संगीत अथवा चित्रकला प्राप्य तथा कलात्मक कारीगरी है।[1]"

हिंदी शब्दकोश के अनुसार- "शिल्प से अभिप्राय हाथ से कोई वस्तु तैयार करने अथवा दस्तकारी है।[2]"

टालस्टॉय के विचार के अनुसार- "प्रत्येक कलाकार अपने फ़ॉर्म का निर्माण करता है।[3]"

फोस्टर का विचार है कि – "कलाकार सदैव नई टक्नीक की खोज करते है। और उनका प्रयत्न तब तक जारी रहता है जब तक तक उनका कार्य उन्हें प्रोदीप्त करता रहेगा।[4]"

शोध पद्धति

इस आलेख में विवरणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त सामग्री संकलन के रेणु जी द्वारा रचित ठुमरी कहानी संग्रह और रेणु पर लिखा गया विव्ध विद्वानों की ग्रंथों की सहयता लिया गया है।

शोध उद्देश्य

1. कथा साहित्य में शिल्प के महत्व को समझना।
2. 'तीसरी कसम' कहानी में प्रयुक्त शिल्पगत विशेषता का समीक्षा करना।

तीसरी कसम में प्रयुक्त शिल्प विधान

कथा साहित्य में शिल्प से आशय मूलतः वह पद्धति है जिसके द्वारा लेखक अपने कथ्य या विचार को प्रस्तुत करता है। फणीश्वरनाथ 'रेणु' की कहानी 'तीसरी कसम' की शिल्प विधान पर निम्नलिखित बिंदुओं में चर्चा किया जा सकता हैं-

1. कथा कहने की शैली

कथा कहने की शैली वह पद्धति है, जिसके द्वारा लेखक अपने कथा को विकसित करता है या कहता है। रेणु ने तीसरी कसम कहानी में कथा कहने की निम्नलिखित शैलियों का प्रयोग किया है-

- **वर्णनात्मक शैली :** वर्णनात्मक शैली वह शैली है जिसमें जीवन के विविध पहलुओं को लेखक व्याख्या के साथ प्रस्तुत करता है। इस विधि

के द्वारा लम्बे भाषण, विस्तृत घटनाओं का वर्णन आदि प्रस्तुत किया जाता है। इस शैली का प्रयोग सभी कथाकार अपनी कथा में करता है। रेणु ने भी तीसरी कसम कहानी में उक्त शैली का प्रयोग किया है।

उदाहरण : "पिछले बीस साल से गाड़ी हाँकता है हीरामन। बैलगाड़ी। सीमा के उस पार, मोरँग राज नेपाल से धान और लकड़ी ढो चुका है। कंट्रोल के जमाने में चोरबाजारी का माल उस पार पहुँचाया है। लेकिन कभी तो ऐसी गुदगुदी नहीं लगी थी पीठ में! ....

कंट्रोल का जमाना! हीरामन हीरामन कभी भूल सकता है उस जमाने को......उसके बैलों की बड़ाई बड़ाई बड़ी गद्दी के बड़े सेठ जी खुद करते है अपनी भाषा में...... ।[5]"

- **संवादात्मक शैली :** इस शैली में लेखक कथन या संवादों के द्वारा अपने कथा को कहते है। इस शैली में संवाद लम्बे भी हो सकती है और संक्षिप्त भी। रेणु ने तीसरी कसम कहानी में इस शैली का भी प्रयोग किया है।
  उदाहरण : "भैया तुम्हारा नाम क्या है?"
  "मेरा नाम! ..... नाम मेरा है हीरामन।[6]"
- **फ्लेशबेक शैली :** इस शैली में पात्रों की स्मृति में बीती घटनाओं उभारकर उसे कथानक का रूप देकर पूर्णतः पाठकों के सामने प्रस्तुत किया जाता है। रेणु ने तीसरी कसम कहानी में भी इस शैली का प्रस्तुत किया है।
  उदाहरण : "पिछले बीस साल से गाड़ी हाँकता है हीरामन। बैलगाड़ी। सीमा के उस पार, मोरँग राज नेपाल से धान और लकड़ी ढो चुका है। कंट्रोल के जमाने में चोरबाजारी का माल उस पार पहुँचाया है। है। लेकिन कभी तो ऐसी गुदगुदी नहीं लगी थी पीठ में! ....
  कंट्रोल का जमाना! हीरामन हीरामन कभी भूल सकता है उस जमाने को......उसके बैलों की बड़ाई बड़ी गद्दी के बड़े सेठ जी खुद करते है अपनी भाषा में......
  गाड़ी पकड़ी गई पांचवीं बार, सीमा के इस पार तराई में.......
  ......गारीबानों के दल में तालिया पटपटा उठी थी एक साथ। सभी की लाज रख ली हीरामन के बैलों ने। हुममकर आगे बढ़ गये और बाघ गाड़ी में जुट गये एक-एक करके। सिर्फ दाहिने बैल ने जुटने के बाद ढेर-सा पेशाब किया। हीरामन ने दो दिन तक नाक से कपड़े की पट्टी नहीं खोली थी। बड़ी गद्दी के बड़े सेठ जी की तरह नकबंधन लगाये बिना बरदास्त नहीं कर सकता कोई।[7]"

2. पात्रों की रूप रचना

पात्रों की रूप रचना करने में भी रेणु को सफलता प्राप्त हुआ है। इस कहानी में रेणु ने हीरामन और हीराबाई की प्रेम को व्यंजित किया है। कहानी अन्य पात्र इन दोनों के इद गिर्द घुमते नजर आती है। जाते समय हीराबाई हीरा के सबकुछले जाती है। हीरामन की दुनिया वीरान हो जाती है।

उदाहरण : "उसने उलटकर देखा। बोरे भी नहीं, बाँस भी नहीं, बाघ भी नहीं...... परी...... देवी...... मीता...... हीरादेवी..... महुआ घटवारिन-को-ई नहीं। मरे हुए मुहुर्त की गूंगी आवाजें मुखर होना चाहती है। हीरामन के होंठ हिल रहे है। शायद तीसरी कसम खा रहा है..... कम्पनी की औरत की लदनी......[8]"

"हीराबाई ने हीरामन के कंधे पर हाथ रखा...... इस बार दाहिने कंधे पर। फिर अपनी थैला से रूपया निकालते हुए बोली, 'एक गरम चादर खरीद लेना।' हीरामन की बोली फूटी, इतनी देर बाद- 'इस्स! हरदम रूपया-पैसा! रखिये रूपय!.... क्या करेंगे चादर?[9]"

"हीराबाई ने परख लिया, हीरामन सचमुच हीरा है।[10]"

"चालीस साल का हट्टा-कट्टा आदमी, काला कलूटा, देहाती नौजवान अपनी गाड़ी और बैलों के सिवाय दुनिया की किसी और बात में विशेष दिलचस्पी नहीं लेता।[11]"

इस तरह रेणु को हीरामन के रूप रचना में अद्भुत सफलता मिली है।

हीराबाई एक कम्पनी की औरत है। वह खुबसूरत है। और वह भी अकेलापन से घिरे हुए है। उसकी रूप रचना में भी रेणु को सफलता प्राप्त हुआ है।

उदाहरण : "ई तो परी है।[12]"

"आज रह रहकर उसकी गाड़ी में चम्पा का फूल महक उठता है।[13]"

"हीराबाई का हाथ रुक गया। उसने हीरामन के चेहरे को गौर से देखा। फिर बोली – 'तुम्हारा जी बहुत छोटा हो गया है। क्यों मीता?...... महुआ घटवारिन को सदागर ने खरीद जो लिया है गुरुजी!'[14]"

"कौन कहेगा की कम्पनी की औरत है!...... औरत नहीं लड़की..... ।[15]"

इस तरह पात्रों के रूप रचना में रेणु को अद्भुत सफलता मिली है।

3. भाषा

साहित्य में भाषा ही वह तत्व है जिसके द्वारा लेखक अपनी अनुभूति को अभिव्यक्त करते है। बिना भाषा के कोई कुछ भी नहीं कह सकते। रेणु के कथा साहित्य की भाषा में आंचलिकता का प्रभाव है। जिस कारण उनकी रचनाएँ दूसरे लेखकों की रचनाओं से भिन्न ठहरते है। रेणु ने तीसरी कसम कहानी में साहित्यिक भाषा के साथ-साथ बोलचाल की भाषा, काव्यात्मक भाषा, चित्रात्मक भाषा का भी प्रयोग किया है। भाषा के कुशल प्रयोग के कारण ही तीसरी कसम कहानी रोचक बन पड़ी है। आंचलिकता की पुट के कारण भाषा में थोड़ी कठिनाई आयी है। फिर भी रेणु के तीसरी कसम कहानी की भाषा रोचकता से पूर्ण है। तीसरी कसम कहानी के भाषा प्रयोग को निम्नलिखित बिंदुओं पर चर्चा कर सकते है-

- **बोलचाल की भाषा :** रेणु ने तीसरी कसम कहानी में बोलचाल की भाषा का सार्थक प्रयोग किया है। जिस कारण कहानी की भाषा रोचकता से पूर्ण होने के साथ-साथ दूसरे लेखकों की भाषा शैली से अलग ठहरते है। बोलचाल की भाषा प्रयोग में आंचलिक शब्दों की भरमार है।
  उदाहरण : "आप मुझे गुरुजी मत कहिए।"
  'तुम मेरे उस्ताद हो। हमार शास्त्रर में लिखा हुआ है एक अच्छर सिखानेवाला भी गुरु है और एक राग सिखानेवाला भी उस्ताद।'
  'इस्स शास्त्रर भी जानती है।'[16]"
- **काव्यात्मक भाषा :** रेणु ने तीसरी कसम कहानी में काव्यात्मक भाषा का भी प्रयोग किया है। काव्यात्मक भाषा परिवेश चित्रण में सहायक होते है। रेणु की कहानी तीसरी कसम में काव्यात्मक भाषा परिवेश चित्रण में सहायक हुआ है।
  उदाहरण : "इस बार यह जनानी सवारी। और औरत है या चम्पा का फूल। जबसे गाड़ी मह मह महक रही है।[17]"
- **चित्रात्मक भाषा :** चित्रात्मक भाषा प्रकृति चित्रण में सहायक होते है। रेणु ने तीसरी कसम कहानी में चित्रात्मक भाषा के प्रयोग से प्रकृति का सुंदर वर्णन किया है।
  उदाहरण : "आसिन-कातिक के भोर में छा जाने वाले कुहासे से हीरामन को पुरानी चिढ़ है। बहुत बार वह सड़क भूलकर भटक चुका है। किंतु आज के भोर के इस घने कुहासे में भी वह मगन है। नदी के किनारे घन खेतों से फूले हुए धान के पौधों की पवनिया गंध आती है। पर्व पावन के दिन गाँव में ऐसी ही सुगंध फेली रहती है। उसकी गाड़ी में फिर चम्पा का फूल खिला। उस फूल में एक परी बेठी है...... जै भगवती।[18]"

4. लोकगाथा, लोकगीतों, मिथकों का सार्थक प्रयोग

लोकगीतों, लोकगाथाओं, मिथकों आदि के प्रयोग से कहानी को एक अलग रूप दिया जा सकता है। कथा साहित्य के रूप निर्माण में इन तत्व का महत्वपूर्ण योगदान है।

- लोकगीतों के प्रयोग से कहानियों में ग्रामीनता लाने में रेणु विशेष सफल है। उनकी कहानी या उपन्यासों में आंचलिकता इन्हीं तत्वों के द्वारा ही आयी है। लोकगीतों के द्वारा लोक मन का दर्द, छोटी-छोटी खुशियाँ, आकाक्षाएँ अभिव्यक्त होती है, जिसका मानव जीवन में महत्वपूरण स्थान होते है। तीसरी कसम कहानी ने लोकगीतों का सुंदर प्रयोग मिलता है। कथा का ही एक तत्व बनकर कहानी में आयी है।

  उदाहरण :

  i. "लाली लाली डोलिया में
  लाली रे दुलहिनिया
  पान खाये।[19]"

  यह गीत हीरामन के अधुरेपन को ही व्यक्त करते है।

  ii. "सजन रे झूठ मत बोलो, खुदा के पास जाना है।
  नहीं हाथी, नहीं घोड़ा, नहीं गाड़ी
  वहाँ पैदल ही जाना है। सजन रे..... ।[20]"

  यह गीत ग्रामीण जन के भोलापन और ईश्वर के प्रति भय को दर्शाते है।

  iii. "सजनवा बैरी हो ग'य हमारो! सजनवा........!
  अरे चिठिया हो तो सब कोई बांचे, चिठिया हो तो.....
  हाय! करमवा, होय करमवा......
  कोई न बांचे हमारो सजनवा.... हो करमवा...... ![21]"

  यह गीत ग्रामीण जन की प्रेम को सटीक रूप से व्यक्त करते है और सजनवा से दूर हो जाने का कारण अपने भाग्य को मानकर रोती है। यह गीत ग्रामीण जीवन के भोलापन, सादगी को स्पष्ट करते है।

मिथकों का प्रयोग भी तीसरी कसम कहानी में सार्थक बन पड़ी है। मिथकों के प्रयोग ने कहानी को एक अलग ही रूप प्रदान की है। इस कहानी में प्रयुक्त महुआ घटवारिन, नमालगढ़ ड्यूढ़ी आदि कथाओं को कहानीकार ने हीरामन और हीराबाई के कथा की विभिन्न स्थितिओं को व्यक्त करने के लिए किया है। जिससे कथानक को विकसित होने में सहायता मिली है।
उदाहरण : "तुम्हारा जी बहुत छोटा हो गया है। क्यों मीता?..... महुआ घटवारिन को सौदागर ने खरीद जो लिया है गुरुजी!.....[22]"
इस वाक्य के द्वारा लेखक हीराबाई की विवशता को व्यक्त करते है। हीराबाई हीरामन से प्रेम तो करती है परंतु कह नहीं पाती है क्योंकि हीराबाई एक कम्पनी की औरत है, जिसे कम्पनी के अनुसार चलनी पड़ती है। हीराबाई अपनी तुलना महुआ घटवारिन से करते हुए कहती है कि उस समय जिस प्रकार महुआ को सौदागर ने खरीद लिया था। उसी प्रकार आज मुझे भी कम्पनी ने खरीद लिया है।
मिथक और लोकगीतों आदि के प्रयोग से लेखक ने कहानी को एक अलग रूप प्रदान किया है। लोकगीतों, मिथकों आदि कहानी के कथा के अंग बनकर आये, जो कथानक को विकसित करते है। कहानी का जो प्रभाव लोकगीतों, मिथकों के साथ आयी है वह प्रभाव बिना लोकगीतों और मिथकों के नहीं रहेंगे।

5. शब्द भंडार

रेणु ने तीसरी कसम कहानी में विविध भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया है। उनकी भाषा की सबसे उल्लेखनीय विशेषता यह है कि उनकी भाषा में विविधता है। उन्होंने भाषा के क्षेत्र में नूतन प्रयोग किया है। उनका शब्द चयन अत्यंत समृद्ध और व्यापक है। रेणु जी ने भाव, विचार तथा चरित्र के अनुकूल भाषा का नूतन प्रयोग किया है। उन्होंने तत्सम, तद्भव, देशज, आगत आदि शब्दों का सार्थक प्रयोग किया है।
उदाहरण :

- अंग्रेजी : दी, मैन, कंट्रोल, साइकिल, बायस्कोप, थियेटर, कम्पनी, मेंएजर, टिकट आदि
- पश्तो : गुंडा
- तुर्की : कुली, कुर्ता, दारोगा आदि
- अरबी-फारसी : सिपाही, जिला, देहात, आईना, हलवाई, चीज, बंदुक, औरत, मालिक, मकान, खुशबू, बाजार आदि
- चीनी : चाय
- पुर्तगाली : बाल्टी, बिस्कुट
- तद्भव : घर, घोड़ा, हाथी, बाघ, आँख, गाँव आदि
- तत्सम : देवत, देवी, देव, सरस्वती आदि
- देशज : टप्पर, कनखी, चाह, गुदगुदी, हाँकता, स्साला, इसपितल, डागडरनी, टेशन आदि

इस प्रकार देखते है कि रेणु की तीसरी कसम कहानी में शब्द चयन की विविधता है।

6. सांकेतिकता

रेणु ने तीसरी कसम कहानी में सांकेतिक वाक्य का भी प्रयोग किया है। उदाहरण : "तुम्हारा जी बहुत छोटा हो गया है, क्यों मीता?..... महुआ घटवारिन को सौदागर ने खरीद जो लिया है गुरुजी!....[23]"

7. प्रतीकात्मकता

रेणु ने तीसरी कसम कहानी में प्रतीकों का भी प्रयोग की है। जिससे भाषा मनोरम और अर्थपूर्ण बन पड़े है।
उदाहरण : "आसिन-कातिक के भोर में छा जाने वाले कुहासे से हीरामन को पुरानी चिढ़ है। बहुत बार वह सड़क भूलकर भटक चुका है। किंतु आज के भोर के इस घने कुहासे में भी वह मगन है। नदी के किनारे घन खेतों से फूले हुए धान के पौधों की पवनिया गंध आती है। पर्व पावन के दिन गाँव में ऐसी ही सुगंध फेली रहती है। उसकी गाड़ी में फिर चम्पा का फूल खिला। उस फूल में एक परी बेठी है..... जै भगवती।[24]" 'चम्पा का फूल', 'फूल में परी' आदि प्रतीकों का प्रयोग है।
"हीरामन सचमुच हीरा है।[25]" में भी प्रतीकों का प्रयोग है। आदि

8. युग्म शब्द

साहित्यकार अनेक सार्थक शब्दों में, अर्थ की सीमा की व्यापकता के लिए, उनके साथ उन्हीं की ध्वनि के आधार पर बने हुए शब्दों को जोड़कर युग्म शब्द बना लेते हैं। उन शब्दों को युग्म शब्द कहा जाता है। उदाहरण के लिए कभी-कभी, आगे-पीछे, इधर-उधर, बाल-बच्चे आदि। इनमें निरर्थक शब्द सार्थक शब्द से मिलकर इत्यादि भाव जोड़ देते है। इस तरह की युग्म शब्दों का प्रयोग रेणु ने तीसरी कसम कहानी में की है, जिससे भाषा जानदार बन पड़ी है। इसके साथ ही उसमें स्वाभाविक ताजगी भी आ गयी है।
उदाहरण : चुक्की-मुक्की, भूखे-प्यासे, नदी-नाला, पीछे-पीछे, एक-एक, मह-मह, माल-बाल, रोम-रोम, हटता-कट्टा, बाल-बच्चे, धीरे-धीरे, इस-बिस, धन-दौलत, पल-पल, बीस-पच्चीस, बोली-ठोली, हाल-चाल, दुबला-पतला, इधर-उधर, बारी-बारी, हुँक-हुँक, दिरं, जान-पहँचान, हेल-मेल आदि।

9. ध्वन्यात्मक शब्दों का सार्थक प्रयोग

रेणु ने ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रयोग परिवेश को अधिक जीवंत बनाने के लिए की है। जिससे कहानी के परिवेश अधिक सटीक बन पड़े है।

उदाहरण : "छटक छतक[26]"

"किर्र र्र र्र र्र कड़क ड़ ड़ र्र घन घन धराम[27]"

"घन-घन-घन-धराम[28]"

रेणु ने तीसरी कसम कहानी में कहीं कहीं वाक्य की जगह पर विराम चिह्न का सार्थक प्रयोग किया है। विराम चिह्न वह व्यक्त करने में सक्षम बन पड़ी है जो शायदा ही कोई वाक्य कर पाती।

उदाहरण : बैलों ने भैया शब्द पर कान हिलाये।

"? ? ? .... ? ? ? ****** ......[29]"

10. लोकोक्ति, मुहावरे और कहावतों का सार्थक प्रयोग

रेणु ने तीसरी कसम कहानी में लोकोक्ति, मुहावरे और कहावतों का भी सार्थक प्रयोग किया हैं। जिससे कहानी में और अधिक आंचलिक विशेषता आने के साथ-साथ अधिक जीवंत बन पड़ी है।

उदाहरण : "देशी मुर्गी विलायती चाल[30]"। आदि

11. संवाद योजना

लेखक ने अपनी वृत्ति, पात्रों के चरित्र, विषय की मांग आदि को देखते हुए आवश्यकतानुसार संक्षिप्त और कोई जगह पर प्रभाव और अपनी विचारों को स्पष्ट करने के लिए लम्बी संवादों की रचना की है।

उदाहरण :

" 'इतनी चीजे कहाँ से ले आये हो?'

'इस्स गाँव का दही नामी है।...... चाह तो फरबिसगंज जाकर ही पायेगा।'

'इस्स!'

'अच्छी बात आप खा लीजिए पहले।'

'पहले पीछे क्या? तुम भी बेठो।'[31]"

ऐसे संक्षिप्त और छोटे वाक्य रचना में भी भाषा मोहक बन पड़ी है।

इसके विपरीत अपने विचारों को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए लम्बी संवादों का भी प्रयोग की है। जिससे कहानी की भाषा मनोरम बन पड़ी है।

उदाहरण : "इस्स कथा सुनने का बड़ा शौक है आपको?..... लेकिन, काला आदमी, राजा क्या महाराजा भी हो जाये, रहेगा काला आदमी ही। साहेब के जैसा अक्किल कहाँ से पायेगा, हँसकर बात उड़ा भी दी सभी ने। तब रानी को बार-बार सपना देने लगा देवता। सेवा नहीं कर सकते तो जाने दो, नहीं रहेंगे तुम्हारे यहाँ। इसके बाद देवता खेल शुरू हुआ। सबसे पहले दोनों दंतार हाथी मरा, फिर घोड़ा, फिर पटपटांग...... ।[32]"

इसके अतिरिक्त रेणु ने तीसरी कसम कहानी में अधुरे वाक्य का भी सार्थक प्रयोग किया है। अधुरे वाक्य लेखक के कहे बिना ही बहुत कुछ कह देते है।

उदाहरण : "तुम्हारा जी बहुत छोटा हो गया है, क्यों मीता?...... महुआ घटवारिन को सौदागर ने खरीद जो लिया है गुरुजी!.....[33]"

इस वाक्य ने जो बात व्यक्त की है शायद यदि यह वाक्य सम्पूर्ण होते तब यह अभिव्यक्त नहीं कर पाते। इससे कथा साहित्य को एक नया रूप मिली है।

12. शीर्षक योजना

कहानी की तरह तीसरी कसम कहानी का शीर्षक भी सटीक एवं सार्थक बन पड़ी है। हीरामन पहले ही दो कसमें खा चुका हैं। जब हीराबाई उसे छोड़कर मथुरा मोहन कंपनी लौट जाती है तब वह तीसरी कसम खाती है। कहानी की संपूर्ण घटना हीराबाई की आना और फिर से वापस मथुरा मोहन कंपनी लौत जाने पर आधारित है। हीराबाई जब चली जाती है तब हीरामन तीसरा कसम खाता है।

उदाहरण : "उसने उलटकर देखा। बोरे भी नहीं, बांस भी नहीं, बाघ भी नहीं...... । परी..... देवी..... मीता...... हीरादेवी...... महुआ घटवारिन को-ई नहीं। मरे हुए मुहूर्त की गूंगी आवाजें मुखर होना चाहती है। हीरामन के होंठ हिल रहे है। शायद तीसरी कसम खा रहा है— कंपनी की औरत की लदनी..... ।[34]"

इस प्रकार तीसरी कसम कहानी की शीर्षक भी सार्थक बन पड़े है।

निष्कर्ष

तीसरी कसम कहानी का शिल्प प्रयोग प्रभावशाली है। शिल्प ही कहानी को एक नई रूप देते है। शिल्प तत्व की अध्ययन के अभाव में कहानी का अध्ययन अधुरे ही रहते है। रेणु ने तीसरी कसम कहानी में आंचलिक भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी, अरबी-फारसी, पुर्तगाली आदि भाषाओं के शब्दों का भी प्रयोग किया हैं। संवाद योजना में लंबी और संक्षिप्त संवाद के साथ-साथ अधुरे वाक्य का भी प्रयोग किया है। रेणु ने तीसरी कसम कहानी में कथा की विविध शैलियों का प्रयोग किया हैं। शिल्प तत्व ही कहानी साहित्य को अलग रूप प्रदान करता है।

सन्दर्भ सूचि

1. फनीश्वरनाथ रेणु और उनका कथा साहित्य, डॉ. रागिनी वर्मा, पृष्ठ- 221
2. वही, पृष्ठ- 221
3. वही, पृष्ठ- 221
4. वही, पृष्ठ- 221
5. ठुमरी, फणीश्वरनाथ रेणु, पृष्ठ- 94
6. वही, पृष्ठ- 98
7. वही, पृष्ठ- 97
8. वही, पृष्ठ- 126
9. वही, पृष्ठ- 124
10. वही, पृष्ठ- 99
11. वही, पृष्ठ- 99
12. वही, पृष्ठ- 98
13. वही, पृष्ठ- 97
14. वही, पृष्ठ- 125
15. वही, पृष्ठ- 104
16. वही, पृष्ठ- 111
17. वही, पृष्ठ- 97
18. वही, पृष्ठ- 99
19. वही, पृष्ठ- 106
20. वही, पृष्ठ- 107
21. वही, पृष्ठ- 103
22. वही, पृष्ठ- 125
23. वही, पृष्ठ- 125
24. वही, पृष्ठ- 99
25. वही, पृष्ठ- 99
26. वही, पृष्ठ- 114
27. वही, पृष्ठ- 116
28. वही, पृष्ठ- 120
29. वही, पृष्ठ- 112

30. वही, पृष्ठ- 125
31. वही, पृष्ठ- 105
32. वही, पृष्ठ- 102
33. वही, पृष्ठ- 125
34. वही, पृष्ठ- 126